भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठः द्वितीयः पाठनाम स्वर्णकाकः

ताः 11-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- प्रतिनिवृत्तिकाले स्वर्णकाकेन कक्षाभ्यन्तरातिस्रो मञ्जूषा :तत्पुरः समुक्षिप्ताः। लोभाविष्टा सा वृहत्तमां मञ्जूषां गृहीतवती । गृहमागत्य सा तर्षिता यावद्

मञ्जूषामुद्घाटयति तावत्तस्यां भीषणः कृष्णसर्पो विलोकितः।लुब्धया बालिकया

लोभस्य फलं प्राप्तम् ।तदनन्तरं सा लोभं पर्यत्यजत् ।

- शब्दार्थाः

लोभाविष्टा - लालची , बृहत्तमां - सबसे बड़ी

गृहीतवती - ले ली , तर्षिता –व्याकुल

उद्घाटयति - खोलती है , भीषणः- भयानक

विलोकितः- देखा , प्राप्त किया , मिल गया

- अर्थ

वापस लौटते समय सोने के कौए ने कमरे के अन्दर से तीन पेटियाँ (सन्दूक)

उसके सामने रख दी ।उस लालची (लड़की) ने सबसे बड़ी पेटी (सन्दूक) ले

ली ।घर आकर वह व्याकुल (लड़की)जब सन्दूक खोलती है ,तो उसने

भयानक काला साँप देखा ।लालची लड़की को लालच का फल मिल गया ।

उसके बाद उसने लालच छोड़ दिया ।